शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ भावना

वीनु भाई एन.पटेल
सहायक प्राध्यापक
एम. एम. चौधरी आर्ट्स कॉलेज
राजेंद्र नगर, भिलोड़ा, गुजरात भारत

शोध संक्षेप

वैदिक साहित्य का सर्वोपरि ग्रंथ ऋग्वेद है, किंतु इसके तुरंत बाद यदि किसी महत्वपूर्ण ग्रंथ का नाम लिया जात है तो वह है शतपथ ब्राह्मण। वैदिक संस्कृति की अविरत प्रवहमान सरिता को अपनी जीवनधारा से परिचालित करने वाला तथा पूर्ववर्ती वैदिक संस्कृति की मुक्तालड़ियों को परवर्ती पौराणिक संस्कृति से जोड़ने वाला यदि कोई एकाकी प्रेरक आर्ष ग्रंथ है तो वह है शतपथ ब्राह्मण। वस्तुतः ब्राह्मण ग्रंथ सूखे कर्मकाण्ड की विधि बताने वाली रचनाएं नहीं हैं। उनमें तत्कालीन भारतीय समाज का कई दृष्टियों से चित्रण किया गया है। इसमें दार्शनिक विचार-विमर्श भी दीख पड़ता है।

प्रस्तावना

शतपथ की विचारधारा के अनुसार यज्ञ का द्विविध स्वरूप है - प्राकृत एवं कृत्रिम। प्राकृत यज्ञ प्रकृति में निरंतर चल रहा है। उसी का अनुसरण कर कृत्रिम यज्ञ विहित हुआ है। "देवान् अनुविधा वै मनुष्याः यद् देवा अकुर्वन् तदहं करवाणी" यज्ञमूलक प्रस्तुत सिद्धांत शतपथ में कुरु पांचाल देशीय आरुणी-उद्दालक के उपाख्यान में मिलता है। कृत्रिम यज्ञ की परिभाषा निम्न रूप में निरुक्त में दी गई है:

यज्ञः कस्मात् प्रख्यातं यजतिकर्मेति नैरुक्ताः
याच्जो भवतीति वा यजुरुन्नो भवतीति वा।
बहुकृष्णाजिन इत्यौयमन्यवः यजूष्येनं नयन्तीति वा।1

अर्थात यजनार्थक होने के कारण फल विशेष की कामना के लिए किए जाने के कारण यजुर्मंत्रों द्वारा सफल होने के लिए यज्ञ कहा जाता है। प्रस्तुत परिभाषा कृत्रिम यज्ञ की अत्यंत सार्थक परिभाषा है, किंतु शतपथ में प्रदत्त यज्ञ की निर्वचनात्मक परिभाषा अपने व्यापक परिवेश में यज्ञ के उक्त द्विविध रूपों को ग्रहण कर लेती हैः

अथ यस्माद्यसो नामा घ्नन्ति वाएनमेतद्यभिषुएवन्ति तद्यदेनं तन्वते तदेन जनयन्ति स तायमानो जायते स यन्जायते तस्माद्यंजोयज्ञो ह वै नामैतद्यस्य इति।2

अर्थात जब इसे कुचलते हैं तो इसे मारते हैं, जब इसे फैलाते हैं तो उत्पन्न करते हैं। यह विस्तारित किया जाता हुआ उत्पन्न होता है। अतः 'यन् जायते' से यज्ञ नाम पड़ा। स्पष्ट है कि प्रस्तुत व्याख्या व्यापक ग्रंथों की प्रदात्री है। अतः शतपथ ब्राह्मण में वाक्, पुरुष, प्राण, प्रजापति, विष्णु आदि को यज्ञ से समीकृत किया गया है। कुछ विद्वान् इन पदों को यज्ञ का पर्याय मानते हैं।3

वैज्ञानिक दृष्टि से अग्नि में सोम की आहुति ही यज्ञ है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार जगत 'अग्निशोमात्मक' है। सोम अन्न है तथा अग्नि अन्नाद्। अग्निरूपी अन्नाद सोमरूपी अन्न की आहुति ग्रहण करता रहता है। यही क्रिया जगत में सतत वर्तमान है। जठराग्नि में वैश्वानर अग्नि है, जिसमें हम प्रतिदिन सुबह-शाम अन्नाहुति देते हैं। गीता में भी कहा गया है:

सहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमास्थितः।
प्राणायानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।4

निष्कार्षतः भौतिक यज्ञ इन सभी सूक्ष्म यज्ञों का प्रतीक मात्र है। स्थूल द्वारा सूक्ष्म तक सुगमता से पहुंचा जा सकता है। अतः भौतिक यज्ञ की पूर्ण प्रक्रिया का अवगाहन कर उन प्रक्रियाओं के प्रतीकार्थ जान लेने पर वैदिक ऋषियों द्वारा चिंतित प्राकृत विज्ञान को समझ लेना सरल हो सकता है। यज्ञ संबंधी विभिन्न सादृश्य विधान स्पष्ट हुए से प्रतीत होने लगते हैं। 'यज्ञ' पुरुष है हुविर्द्धन इसका शिर, आहवनीय मुख, अग्नि घ्रीय तथा मार्जालीय दोनों बाहु...' इत्यादि द्वारा यज्ञ का मानवीयकरण प्रस्तुत किया गया है।''5

सृष्टि यज्ञ का सादृश्य विधान भी दर्शनीय है। संवत्सर यजमान है, ऋतुएं यज्ञ करवाती हैं, वसंत अग्नीध है, अतः वसंत में दावाग्नि फैलती है। वह अग्निरूप है। ग्रीष्म ही अध्वर्यु है, क्योंकि वह तप्त-सा होता है। अध्वर्यु भी तप्त की तरह निष्क्रमण करता है। वर्षा उद्गाता है, क्योंकि जोर से बरसाता है। साम के समान उपशब्द होता है। शरद् ही ब्रह्मा है, क्योंकि शस्य उसी से पकता है।6 प्रजा ब्रह्वती है यह कहा जाता है। हेमंत होता है। वषट्कृत की तरह इसमें पशु कष्ट पाते हैं। ये ही देवता यजन कराते हैं। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में वर्णित नभ यज्ञ का उदाहरण प्रस्तुत है:

'अम्भ्रं पुरीषं चंद्रमा आहुतयः नक्षत्रादि समिधः यच्चंद्रमा नक्षत्रे वसंति आहुतिस्ततः समिधि वसति'' आदि 7 शतपथ यज्ञ को देवों की आत्मा कहता है।8 निरुक्तकार भी जब यह उल्लेख करता है कि वाणी का पुष्प यज्ञ है तथा फल देतवा तो इसी तथ्य की ओर इंगित करता है। शतपथ का प्रस्तुत कथन यज्ञ के दिव्यत्व को लक्षित करता है। अतः यह भी कहा गया है कि मानवीय कार्य यज्ञ के लिए नाशकारक है।10

मानवीय कार्यों से तात्पर्य यहां अनृत कार्यों से है, क्योंकि शतपथकार ने प्रारंभ में ही मनुष्य को अमेध्य व अनृत माना है। अतः यज्ञ मनुष्य को दिव्य प्रवृत्तियों की ओर ले जाने का साधन है। यज्ञ ही प्रकाश, दिन, देवता तथा सूर्य है।11 शतपथ ब्राह्मण के अनुसार यज्ञ इहलोक में साक्षात् ऐश्वर्य रूप तथा परलोक में स्वर्ग प्राप्ति का साधन है।12 देवों ने भी यज्ञ के द्वारा ही सब कुछ जीता था।13 यज्ञ के द्वारा यजमान मृत्यु से ऊपर उठा जाता है। वेदी में स्थापित अग्नि ही प्रजापति है। प्रजापति एवं अग्नि दोनों ही यजमान के दैवी प्रतिरूप हैं। स्वयं प्रजापति का स्वरूप संवत्सर है तथा संवत्सर ही मृत्यु है। अतः यज्ञ द्वारा जयमान मृत्युरूप होकर मृत्यु से ऊपर उठ जात है।13 शतपथ में श्रम एवं तप का महत्व पुनः पुनः दर्शाया गया है।14 असुरों पर देवों की विजय का मूल कारण उनका श्रम एवं तप था। श्रम एवं तप का यज्ञ भी प्रतीक है। शतपथ प्रदत्त यज्ञ की परिभाषा के अनुसार श्रम का विस्तार ही जीवन है तथा श्रम को कुचलना मृत्यु अतः प्रत्यक्ष है कि यज्ञ के सिद्धांत को अधिगम्य बनाने के लिए यज्ञ की शतपथोक्त परिभाषा

अत्यंत सार्थक व्यापक एवं व्यंजनापूर्ण दिखाई पड़ती है।

उक्त विवरणात्मक विमर्श के आधार पर भौतिक यज्ञ ब्रह्माण्ड की रचना को वैज्ञानिक आधार पर प्रतीकात्मक शैली में समझाने का साधन है। सततः क्रियाशील सृष्टि की उत्पत्ति विद्या ही यज्ञ का मूल है, अतः भौतिक यज्ञ प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। जो यज्ञ संहिता काल में देवों की स्तुति का साधन मात्र समझा जाता था।15 उसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म विषयों पर तात्विक चिंतन प्रस्तुत कर उसे परम साध्य या लक्ष्य बना देने का श्रेय केवल शतपथ को है।

संदर्भ

1 निरुक्त 3-4
2 शतपथ ब्राह्मण 3-9, 4, 23
3 ऐतरेय ब्राह्मण, नाथुलाल पाठक, पृष्ठ 171
4 शतपथ ब्राह्मण 3, 5, 3 1, 3, 4,
5 वही 11, 2, 7, 32
6 वही 10, 5, 4, 17
7 भारतीय संस्कृति और साधना प्रथम खण्ड पृष्ठ 168
8 शतपथ ब्राह्मण
9, 3, 2, 7 9 शतपथ ब्राह्मण 1, 4, 1, 35
10 शतपथ ब्राह्मण 1 ,1, 2, 21
11 शतपथ ब्राह्मण 1, 7, 1, 9, 7, 7, 3, 1
12 शतपथ ब्राह्मण 3, 1, 4, 3
13 ऋग्वेद 1, 153, 17, 10, 30
14 यजुर्वेद 18, 25
15 हिन्दू सभ्यता, राधा कुमुद मुकर्जी, पृष्ठ 118